Client CALCUTTA CHAMBER OF COMMERC
Publication PRABHAT KHABAR
Events SCOPE OF INDUSTRY IN J&K
Date 23rd DECEMBER' 2023

launcherz
Public Relations & Events

अखबार नहीं आंदोलन

प्रभात खबर

कोलकाता । रांची । पटना । जमशेदपुर । धनबाद । देवघर । मुजफ्फरपुर । भागलपुर से प्रकाशित

जम्मू-कश्मीर के विकास में योगदान देकर देश के निर्माण में बनें भागीदार : मनोज सिन्हा

श्रीकांत शर्मा, कोलकाता

पश्चिम बंगाल दौर पर पहुंचे जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने शुक्रवार को एक कार्यक्रम में बंगाल के व्यवसायियों से आग्रह करते हुए कहा कि जम्मू-कश्मीर तेजी से विकास कर रहा है. वहां बेहतर माहौल बना है. स्थितियां सामान्य हुई हैं. यह पहली बार है कि जम्मू के साथ ही कश्मीर घाटी के लिए भी बड़ी संख्या में निवेश आ रहा है. देश की नामी कंपनियों ने वहां 90 हजार करोड़ के निवेश का प्रपोजल बनाया है. श्री सिन्हा ने बंगाल के व्यवसायियों को आश्वस्त करते हुए कहा कि जम्मू-कश्मीर सरकार आप की हरसंभव मदद करेगी. प्रधानमंत्री भी राज्य को औद्योगिक विकास के लिए लगातार प्रोत्साहित कर रहे हैं. इस दौरान मनोज सिन्हा ने बंगाल के व्यवसायियों से कहा कि सब जगह लाभ न देखकर देश निर्माण के लिए भी कार्य करें. उन्होंने कहा : ऐसे में आप जम्मू-कश्मीर के विकास में योगदान देकर देश निर्माण में भागीदार बन सकते हैं.

शिव व शंकराचार्य की भूमि है जम्मू-कश्मीर

उप राज्यपाल मनोज सिन्हा ने कहा कि जम्मू-कश्मीर भगवान शंकर की पुण्य भूमि है और अद्वैतवाद के प्रणेता आदि शंकराचार्य की तपोभूमि रही है. बंगाल में भी भगवान शंकर के प्रति काफी भक्ति है. गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने उत्सर्ग लिखते समय लिखा था कि शांति, शिव और अद्वैतवाद के जरिये भारत को जाना जा सकता है.

श्री सिन्हा ने कहा कि बेलूड़मठ और अनंतनाग के बीच गहरा और पुराना आध्यात्मिक संबंध है. 1937 में स्वामी अशोकानंद ने अनंतनाग के एक छोटे से गांव में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की थी. जम्मू-कश्मीर में समृद्धशाली संस्कृति, संपदा, ज्ञान, खानपान और मेहमान नवाजी की परंपरा रही है. पूरी दुनिया कश्मीर की खूबसूरत वादियों की दीवानी रही है. गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर जम्मू-कश्मीर के उतने ही प्रिय हैं, जितने कि कल्हण पश्चिम बंगाल के हैं. हरि चट्टोपाध्याय या अजय कुमार मुखोपाध्याय जैसे बंगाल के अनेक लेखकों ने कल्हण की राज तरंगिनी का अनुवाद कर कश्मीर के इतिहास को आम लोगों तक पहुंचाने का भगीरथ प्रयास किया था.

बंगाल व जम्मू-कश्मीर के बीच ऐतिहासिक सांस्कृतिक विरासत

उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने कहा : मुझे प्रसन्नता है कि जम्मू-कश्मीर के औद्योगिक विकास की चर्चा के राज्य वर्तमान और भविष्य की उपेक्षा के अनुसार आज आप के साथ उपस्थित हूं. उम्मीद है कि बंगाल और जम्मू-कश्मीर के बीच ऐतिहासिक सांस्कृतिक विरासत के आलोक के बीच इसे दोबारा से कायम करने में हम सफल होंगे. आज जम्मू-कश्मीर का तेजी से विकास हो रहा है.